पहाड़िया जनजाति

चर्चा में क्यों?

झारखंड की **पहाड़िया जनजाति** का लक्ष्य **समुदाय के नेतृत्व वाले बैंकों** में देशी किस्मों को जमा करके **बीज स्वतंत्रता** हासिल करना है।

मुख्य बिंदु:

- वर्ष 2019 में, **पाकुड़ और गोड्डा के पहाड़ी ज़िलों** में चार समुदाय-आधारित बीज बैंक स्थापित किये गए थे। बैंक **90 गाँवों में 1,350 से अधिक परिवारों** को सेवाएँ प्रदान करते हैं।
  - वे चार पंचायतों के अंतर्गत संचालित होते हैं: **बारा पकतरी, बारा सिदरी, कुंजबोना और करमा तरन** तथा महिला नेतृत्व वाली समितियों द्वारा प्रबंधित किये जाते हैं।
- बीज बैंकों में पंजीकरण कराने के लिये सदस्यों को 2.5 किलोग्राम देशी बीज जमा करना होगा। राज्य सरकार के कार्यक्रमों के माध्यम से भी बीज उपलब्ध कराये जाते हैं।
  - बुआई के मौसम के दौरान, समितियाँ मामले-दर-मामले के आधार पर वितरण का निर्णय लेती हैं। अब तक वे 3,679 किलोग्राम बीज वितरित कर चुके हैं।
  - सदस्य वर्तमान में स्टॉक को फिर से भरने के लिये प्रत्येक फसल के बाद 0.5 किलोग्राम बीज प्रदान करते हैं।
- तत्काल मांगें पूरी होने के साथ निवासी अब फसल की पैदावार में सुधार और भोजन में आत्मनिर्भर बनने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

पहाड़िया जनजाति

- वे मुख्य रूप से **झारखंड और पश्चिम बंगाल** राज्यों में रहते हैं। वे **राजमहल पहाड़ियों के मूल निवासी हैं,** जिन्हें आज झारखंड के संताल परगना डिवीज़न के रूप में जाना जाता है।
- उन्हें **पश्चिम बंगाल, बिहार और झारखंड की सरकारों द्वारा अनुसूचित जनजाति के रूप में सूचीबद्ध** किया गया है।
- वे **माल्टो बोलते** हैं, जो एक द्रविड़ भाषा है।
- वे **झूम कृषि** करते हैं जिसमें कुछ वर्षों तक कृषि के लिये वनस्पति जलाकर भूमि साफ करना शामिल है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/pahariya-tribe